६. 'इत्यादि' की आत्मकहानी

(पठनार्थ)

– *यशोदानंद अखौरी*

'शब्द-समाज' में मेरा सम्मान कुछ कम नहीं है । मेरा इतना आदर है कि वक्ता और लेखक लोग मुझे जबरदस्ती घसीट ले जाते हैं । दिन भर में, मेरे पास न जाने कितने बुलावे आते हैं । सभा-सोसाइटियों में जाते-जाते मुझे नींद भर सोने की भी छुट्टी नहीं मिलती । यदि मैं बिना बुलाए भी कहीं जा पहुँचता हूँ तो भी सम्मान के साथ स्थान पाता हूँ । सच पूछिए तो 'शब्द-समाज' में यदि मैं, 'इत्यादि' न रहता तो लेखकों और वक्ताओं की न जाने क्या दुर्दशा होती । पर हाँ ! इतना सम्मान पाने पर भी किसी ने आज तक मेरे जीवन की कहानी नहीं कही । संसार में जो जरा भी काम करता है उसके लिए लेखक लोग खूब नमक-मिर्च लगाकर पोथे के पोथे रँग डालते हैं; पर मेरे लिए एक सतर भी किसी की लेखनी से आज तक नहीं निकली । पाठक, इसमें एक भेद है ।

यदि लेखक लोग सर्वसाधारण पर मेरे गुण प्रकाशित करते तो उनकी योग्यता की कलई जरूर खुल जाती क्योंकि उनकी शब्द दरिद्रता की दशा में मैं ही उनका एक मात्र अवलंब हूँ । अच्छा, तो आज मैं चारों ओर से निराश होकर आप ही अपनी कहानी कहने और गुणावली गाने बैठा हूँ । पाठक, आप मुझे 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू' बनने का दोष न लगावें । मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ ।

अपने जन्म का सन-संवत मिती-दिन मुझे कुछ भी याद नहीं । याद है इतना ही कि जिस समय 'शब्द का महा अकाल' पड़ा था उसी समय मेरा जन्म हुआ था । मेरी माता का नाम 'इति' और पिता का 'आदि' है । मेरी माता अविकृत 'अव्यय' घराने की है । मेरे लिए यह थोड़े गौरव की बात नहीं हैं क्योंकि बड़ी कृपा से 'अव्यय' वंशवाले, प्रतापी महाराज 'प्रत्यय' के भी अधीन नहीं हुए । वे स्वाधीनता से विचरते आए हैं ।

मेरे बारे में किसी ने कहा था कि यह लड़का विख्यात और परोपकारी होगा; अपने समाज में यह सबका प्यारा बनेगा; मेरा नाम माता-पिता ने कुछ और नहीं रखा । अपने ही नामों को मिलाकर वे मुझे पुकारने लगे । इससे मैं 'इत्यादि' कहलाया । कुछ लोग प्यार में आकर पिता के नाम के आधार पर 'आदि' ही कहने लगे ।

पुराने जमाने में मेरा इतना नाम नहीं था । कारण यह कि एक तो लड़कपन में थोड़े लोगों से मेरी जान-पहचान थी; दूसरे उस समय बुद्धिमानों के बुद्धि भंडार में शब्दों की दरिद्रता भी न थी । पर जैसे-जैसे

परिचय

परिचय : अखौरी जी 'भारत मित्र,' 'शिक्षा', 'विद्या विनोद, ' पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रह चुके हैं। आपके वर्णनात्मक निबंध विशेष रूप से पठनीय रहे हैं ।

गद्य संबंधी

वर्णनात्मक निबंध : वर्णनात्मक निबंध में किसी स्थान, वस्तु, विषय, कार्य आदि के वर्णन को प्रधानता देते हुए लेखक व्यक्तित्व एवं कल्पना का समावेश करता है।

इसमें लेखक ने 'इत्यादि' शब्द के उपयोग, सदुपयोग-दुरुपयोग के बारे में बताया है ।

मौलिक सृजन

'धन्यवाद' शब्द की आत्मकथा अपने शब्दों में लिखिए ।

शब्द दारिद्र्य बढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरा सम्मान भी बढ़ता गया । आजकल की बात मत पूछिए । आजकल मैं ही मैं हूँ । मेरे समान सम्मानवाला इस समय मेरे समाज में कदाचित विरला ही कोई ठहरेगा । आदर की मात्रा के साथ मेरे नाम की संख्या भी बढ़ चली है । आजकल मेरे अपने नाम हैं । भिन्न-भिन्न भाषाओं के'शब्द-समाज' में मेरे नाम भी भिन्न-भिन्न हैं । मेरा पहनावा भी भिन्न-भिन्न है-जैसा देश वैसा भेस बनाकर मैं सर्वत्र विचरता हूँ । आप तो जानते ही होंगे कि सर्वेश्वर ने हम 'शब्दों' को सर्वव्यापक बनाया है । इसी से मैं, एक ही समय, अनेक ठौर काम करता हूँ । इस घड़ी भारत की पंडित मंडली में भी विराजमान हूँ । जहाँ देखिए वहीं मैं परोपकार के लिए उपस्थित हूँ ।

क्या राजा, क्या रंक, क्या पंडित, क्या मूर्ख, किसी के घर जाने-आने में मैं संकोच नहीं करता; अपनी मानहानि नहीं समझता । अन्य 'शब्दों' में यह गुण नहीं । वे बुलाने पर भी कहीं जाने-आने में गर्व करते हैं; आदर चाहते हैं । जाने पर सम्मान का स्थान न पाने से रूठकर उठ भागते हैं । मुझमें यह बात नहीं है । इसी से मैं सबका प्यारा हूँ ।

परोपकार और दूसरे का मान रखना तो मानो मेरा कर्तव्य ही है । यह किए बिना मुझे एक पल भी चैन नहीं पड़ता । संसार में ऐसा कौन है जिसके, अवसर पड़ने पर, मैं काम नहीं आता ? निर्धन लोग जैसे भाड़े पर कपड़ा पहनकर बड़े-बड़े समाजों में बड़ाई पाते हैं, कोई उन्हें निर्धन नहीं समझता, वैसे ही मैं भी छोटे-छोटे वक्ताओं और लेखकों की दरिद्रता झटपट दूर कर देता हूँ । अब दो-एक दृष्टांत लीजिए ।

वक्ता महाशय वक्तृत्व देने को उठ खड़े हुए हैं । अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिए सब शास्त्रों की बात थोड़ी-बहुत कहना चाहिए पर पन्ना भी उलटने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ । इधर-उधर से सुनकर दो-एक शास्त्रों और शास्त्रकारों का नाम भर जान लिया है । कहने को तो खड़े हुए हैं, पर कहें क्या ? अब लगे चिंता के समुद्र में डूबने-उतराने और मुँह पर रूमाल दिए खाँसते-खूँसते इधर-उधर ताकने । दो-चार बूँद पानी भी उनके मुखमंडल पर झलकने लगा । जो मुखकमल पहले उत्साह सूर्य की किरणों से खिल उठा था, अब ग्लानि और संकोच का पाला पड़ने से मुरझाने लगा । उनकी ऐसी दशा देख मेरा हृदय दया से उमड़ आया । उस समय मैं, बिना बुलाए, उनके लिए जा खड़ा हुआ । मैंने उनके कानों में चुपके से कहा ''महाशय, कुछ परवाह नहीं, आपकी मदद के लिए मैं हूँ । आपके जी में जो आवे प्रारंभ कीजिए; फिर तो मैं कुछ निबाह लूँगा ।'' मेरे ढाढ़स बँधाने पर बेचारे वक्ता जी के जी में जी आया । उनका मन फिर ज्यों का त्यों हरा-भरा हो उठा । थोड़ी देर के लिए जो उनके मुखड़े के आकाशमंडल में चिंता

हिंदी साहित्य की विविध विधाओं की जानकारी पढ़िए और उनकी सूची बनाइए ।

दूरदर्शन/रेडियो पर समाचार सुनिए और मुख्य समाचार सुनाइए ।

चिह्न का बादल दीख पड़ा था, वह एकबारगी फट गया। उत्साह का सूर्य फिर निकल आया । अब लगे वे यों वक्तृता झाड़ने-''महाशयो, धम्मशस्त्रकार, पुराणकार, दर्शनकारों ने कर्मवाद, इत्यादि जिन-जिन दार्शनिक तत्त्व रत्नों को भारत के भांडार में भरा है उन्हें देखकर मैक्समूलर इत्यादि पाश्चात्य पंडित लोग बड़े अंचभे में आकर चुप हो जाते हैं । इत्यादि-इत्यादि ।''

सुनिए और किसी समालोचक महाशय का किसी ग्रंथकार के साथ बहुत दिनों से मनमुटाव चला आ रहा है । जब ग्रंथकार की कोई पुस्तक समालोचना के लिए समालोचक साहब के आगे आई, तब वे बड़े प्रसन्न हुए, क्योंकि यह दाँव तो वे बहुत दिनों से ढूँढ़ रहे थे । पुस्तक को बहुत कुछ ध्यान देकर, उलटकर, उन्होंने देखा । कहीं किसी प्रकार का विशेष दोष पुस्तक में उन्हें न मिला । दो-एक साधारण छापे की भूलें निकलीं पर इससे तो सर्वसाधारण की तृप्ति नहीं होती। ऐसी दशा में बेचारे समालोचक महाशय के मन में मैं याद आ गया । वे झटपट मेरी शरण आए । फिर क्या है ? पौ बारह ! उन्होंने उस पुस्तक की यों समालोचना कर डाली- 'पुस्तक में जितने दोष हैं, उन सभी को दिखाकर, हम ग्रंथकार की अयोग्यता का परिचय देना तथा अपने पत्र का स्थान भरना, और पाठकों का समय खोना, नहीं चाहते । पर दो-एक साधारण दोष हम दिखा देते हैं; जैसे, ---- इत्यादि-इत्यादि ।'

पाठक, देखें ! समालोचक साहब का इस समय मैंने कितना बड़ा काम किया । यदि यह अवसर उनके हाथ से निकल जाता तो वे अपने मनमुटाव का बदला कैसे लेते ?

यह तो हुई बुरी समालोचना की बात । यदि भली समालोचना करने का काम पड़े, तो मेरे ही सहारे वे बुरी पुस्तक की भी ऐसी समालोचना कर डालते हैं कि वह पुस्तक सर्वसाधारण की आँखों में भली भासने लगती है और उसकी माँग चारों ओर से आने लगती है ।

कहाँ तक कहूँ । मैं मूर्ख को विद्वान बनाता हूँ । जिसे युक्ति नहीं सूझती उसे युक्ति सुझाता हूँ । लेखक को यदि भाव प्रकाशित करने को भाषा नहीं जुटती तो भाषा जुटाता हूँ । कवि को जब उपमा नहीं मिलती तो उपमा बताता हूँ । सच पूछिए तो मेरे पहुँचते ही अधूरा विषय भी पूरा हो जाता है । बस, क्या इतने से मेरी महिमा प्रकट नहीं होती ?

चलिए चलते-चलते आपको एक और बात बताता चलूँ । समय के साथ सब कुछ परिवर्तित होता रहता है । परिवर्तन संसार का नियम है । लोगों ने भी मेरे स्वरूप को संक्षिप्त करते हुए मेरा रूप परिवर्तित कर दिया है । अधिकांशतः मुझे 'आदि' के रूप में लिखा जाने लगा है । 'आदि' मेरा ही संक्षिप्त रूप है ।

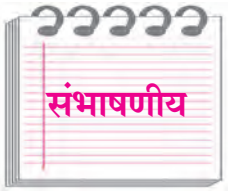

अपने विद्यालय में मनाई गई खेल प्रतियोगिताओं में से किसी एक खेल का आँखों देखा वर्णन कीजिए ।

अपने परिवार के किसी वेतनभोगी सदस्य की वार्षिक आय की जानकारी लेकर उनके द्वारा भरे जाने वाले आयकर की गणना कीजिए ।

गणित, कक्षा नौवीं भाग-१ पृष्ठ १००

शब्द संसार

विख्यात (वि.) = प्रसिद्ध
ठौर (पुं.सं.) = जगह
दृष्टांत (पुं.सं.) = उदाहरण
निबाह (पुं.सं.) = गुजारा, निर्वाह
एकबारगी (क्रि.वि.) = एक बार में
समालोचना (स्त्री.सं.) = समीक्षा, आलोचना

मुहावरा

ढाढ़स बँधाना = धीरज बढ़ाना

भाषा बिंदु

संधि पढ़िए और समझिए : –

संधि

89917H

१) सबको पता होता था कि वे **पुस्तकालय** में मिलेंगे ।
२) वे **सदैव** स्वाधीनता से विचर आए हैं ।
३. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा **प्रत्येक** का कर्तव्य है ।

पुस्तक + आलय = अ+ आ
सदा + एव = आ + ए
प्रति + एक = इ+ए

स्वर संधि

१) **उन्नति** एवं उत्कर्ष में दैनंदिनी का योगदान अतुल्य है।
२) **सम्मान** का स्थान न पाने से रूठकर भागते हैं ।
३. हर कार्य **सदाचार** से करना चाहिए ।

उत् + नति = त् + न
सम् + मान = म् + मा
सत् + आचार = त् + भा

व्यंजन संधि

१) डायरी साहित्य की एक **निष्कपट** विधा है।
२) उसका **पुनरागमन** हुआ ।
३) मित्र को चोट पहुँचाकर उसे बहुत **मनस्ताप** हुआ ।

निः + कपट = विसर्ग(:) का ष्
पुनः + आगमन = विसर्ग(:) का र्
मन : + ताप = विसर्ग (:) का स्

विसर्ग संधि

संधि के भेद

संधि में दो ध्वनियाँ निकट आने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नया रूप धारण कर लेती हैं ।

उपरोक्त उदाहरण में (१) में पुस्तक+आलय, सदा+एव, प्रति+एक शब्दों में **दो स्वरों** के मेल से परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **स्वर संधि** हुई । उदाहरण (२) में उत्+नति, सम्+मान, सत्+आचार शब्दों में व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **व्यंजन संधि** हुई । उदाहरण (३) निः + कपट, पुनः + आगमन, मन : + ताप में विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन हुआ है । अतः यहाँ **विसर्ग संधि** हुई ।

रचना बोध

.....
.....
.....